# संत अलॉयसियस स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**2023—2024**

| भाग अ परिचय – | | | |
|---|---|---|---|
| कार्यक्रम प्रमाण पत्र | कक्षा बी ए | सेमेस्टर प्रथम | सत्र 2023—2024 |
| विषयः प्रयोजनमूलक हिंदी | | | |

| | | |
|---|---|---|
| 1 | पाठ्यक्रम का कोड | A1-FHIN1T |
| 2 | पाठ्यक्रम का शीर्षक | प्रयोजनमूलक हिंदी : परिचय एवं विविध रूप |
| 3 | पाठ्यक्रम का प्रकार | कोर कोर्स (मेजर/ माईनर ) |
| 4 | पूर्वापेक्षा | इस कोर्स का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थी में किसी भी विषय से कक्षा बारहवीं प्रमाण पत्र डिप्लोमा किया हो पात्र हैं। |
| 5 | पाठ्यक्रम अध्ययन की उपलब्धियां कोर्स लर्निंग आउटकम | प्रयोजनमूलक हिंदी एक कार्यात्मक एवं व्यावहारिक हिंदी से संबंधित पाठ्यक्रम है. वैश्वीकरण के युग में विश्व मंच पर हिंदी की स्वीकार्यता में आशातीत वृद्धि हुई है. जिसके कारण आज हिंदी का क्षेत्रफल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं है कि हर क्षेत्र में चाहे सरकारी कार्यालयों कारपोरेट जगत जनसंचार माध्यम के विपक्ष हो अथवा स्कूल कॉलेजों में पढ़ाई का माध्यम सभी जगह हिंदी माध्यम से कार्य करने वाले कुशल व्यक्ति की महती आवश्यकता है. इसी आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए एवं कार्यात्मक हिंदी का पाठ्यक्रम प्रयोजनमूलक हिंदी के रूप में तैयार किया गया है.<br>**पाठ्यक्रम के अध्ययन से**<br>1. विद्यार्थी हिंदी के परंपरागत अध्ययन और साहित्यिक हिंदी से इतर हिंदी के प्रयोजनमूलक और व्यवहारिक पक्ष को सरलता से समझ सकेगा.<br>2. दैनिक जीवन के विविध क्षेत्रों शिक्षा व्यवसाय प्रशासन विधि एवं कला जगत में प्रयुक्त होने वाले हिंदी के व्यवहारिक प्रयोग का ज्ञान विद्यार्थी को हो सकेगा.<br>3. भारत में राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधानों |

| | | |
|---|---|---|
| | | राष्ट्रभाषा और राजभाषा में अंतर और त्रिभाषा सूत्र को विद्यार्थी भली-भांति समझ सकेगा.<br>4. हिंदी प्रयोग में होने वाली अशुद्धियों के सुधार का अभ्यास होगा जिससे विद्यार्थी का शुद्ध हिंदी लिखने का अभ्यास बढ़ेगा.<br>5. पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होकर विद्यार्थी उचित पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग कर अपने व्यवसायिक हिंदी को परिष्कृत कर सकेगा.<br>6. शिक्षा, व्यवसाय, प्रशासनिक एवं कला के क्षेत्र में विद्यार्थी द्वारा मानक हिंदी के शब्दों का सुगम व सटीक प्रयोग करने से ज्ञान में वृद्धि होगी.<br>7. कला के व्यापक क्षेत्र में विद्यमान अनेक घटकों जैसे सिनेमा टीवी और विज्ञापन आदि के लिए विभिन्न विधाओं में बाजार की मांग के अनुरूप हिंदी लेखन का व्यवहारिक ज्ञान विद्यार्थी के लिए रोजगार उपलब्ध कराने में सहायक होगा. |
| 6 | क्रेडिट मान | 06 |
| 7 | **कुल अंक** | **100**<br>**सैद्धांतिक मूल्यांकन – 60**<br>**आंतरिक मूल्यांकन – 40** |

भाग ब पाठ्यक्रम की विषयवस्तु

व्याख्यान की कुल संख्या– 90

**पाठ्यक्रम**

| **इकाई** | **विषय** | **व्याख्यान की संख्या** |
|---|---|---|
| इकाई 1 | प्रयोजनमूलक हिंदी –अर्थ, स्वरूप, नामकरण एवं परिभाषा, प्रयोजनमूलक हिंदी की विशेषताएं एवं महत्व, प्रयोजनमूलक हिंदी के विविध रूप | 18 |
| इकाई 2 | प्रयोजनमूलक हिंदी का प्रयोगक्षेत्र –<br>शिक्षा व प्रशासन के क्षेत्र में<br>व्यवसाय के क्षेत्र में | 18 |

| | | |
|---|---|---|
| | कला के क्षेत्र में | |
| इकाई 3 | **राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति**<br>राजभाषा का स्वरूप एवं परिभाषा<br>राजभाषा और राष्ट्रभाषा में अंतर, संपर्क भाषा,<br>त्रिभाषा सूत्र – परिचय, आवश्यकता एवं महत्व | 18 |
| इकाई 4 | भाषा का अर्थ एवं परिभाषा<br>हिंदी का मानक रूप एवं विशेषताएँ<br>भाषा की अशुद्धियों के प्रकार एवं सुधार | 18 |
| इकाई 5 | पारिभाषिक शब्दावली – अर्थ, स्वरूप, परिभाषा एवं विशेषताएं.<br>पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की आवश्यकता एवं महत्व.<br>विविध क्षेत्रों विज्ञान, प्रशासनिक एवं विधि में प्रयुक्त होने वाले पारिभाषिक शब्द. (50 शब्द) | 18 |

**अनुशंसित सहायक पुस्तकें/ ग्रंथ/ अन्य पाठ संसाधन/ पाठ सामग्री:**

**पाठ पुस्तकें -**


- अंडाल डॉ. प.प., प्रशासनिक हिंदी प्रयोग और संभावनाएं, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2007
- कुलश्रेष्ठ, अरविंद, राजभाषा नीति, संपादक कृष्ण कुमार गोस्वामी, केंद्रीय हिंदी संस्थान नई दिल्ली
- गुप्ता, गार्गी, पारिभाषिक शब्दावली की विकास यात्रा, संपा., भारतीय अनुवाद परिषद नई दिल्ली, 1986
- गोदरेज, विनोद, प्रयोजनमूलक हिंदी, वाणी प्रकाशन, इलाहाबाद, 2016
- झाल्टे, दंगल, प्रयोजनमूलक हिंदी सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2010
- टंडन, प्रो पूरनचंद, आजीविका साधक हिंदी, इंद्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली 1998
- तिवारी भोलानाथ एवं श्रीवास्तव रवींद्रनाथ, व्यावहारिक हिंदी सरलीकरण विशेषज्ञ समिति मधुर वाणी प्रकाशन दिल्ली
- **अरासू, रेव. डॉ. फा. जी. वलन, शुक्ल, अभिलाषा, हिंदी सर्वत्र विद्यते, विश्व हिंदी साहित्य परिषद दिल्ली, संस्करण 2020"**
- **"शुक्ल डॉ. अभिलाषा, अरासू, रेव. डॉ, जी, वलन, हिंदी के विविध आयाम, विश्रु विश्व हिंदी साहित्य परिषद, दिल्ली, संस्करण 2020"**
- **"शुक्ल डॉ. अभिलाषा, अरासू, रेव, डॉ. जी वलन, विविध रूपा हिंदी, विश्व हिंदी**

| | | |
|---|---|---|
| | साहित्य परिषद, दिल्ली संस्करण 2021" | |